राजस्थान के इतिहास लेखन में स्त्री–विमर्श : अभिलेखीय साक्ष्यों के सन्दर्भ में

रामानन्द यादव

प्रस्तावना :

इतिहास के पन्नों में लगभग हाशिए पर रही नारी सामयिक युग में विमर्श का विषय बन गई है। जब अन्य समाज विज्ञानों तथा साहित्य अध्ययनों में स्त्री–विमर्श चर्चा का विषय बना हुआ है तो हमारा इतिहास विषय भी पीछे नहीं है। परन्तु सच तो यह है कि आज भी नारी सामन्तवादी जकड़न से निकलने की कवायद में लगी है। डायन, चुड़ैल, रण्डी, कुलटा तथा छिनाल जैसे शब्द इस पुरुष वर्चस्ववादी समाज ने स्त्रियों के लिए रख छोड़े हैं।

राजस्थान के इतिहास लेखन में अतीत से आज तक नारी की स्थिति या भूमिका पर विहंगम दृष्टि डाले तो हमारे समक्ष निम्न तथ्य उभरकर सामने आते हैं, जो परस्पर विरोधाभासी भी हैं–यहाँ एक ओर नारी देवी के रूप में पूजी जाती थी वहीं दूसरी ओर दावड़ी, पड़दायत, खवासन, गोली और गणिकाओं के रूप में अपनी सेवाएँ देती थीं। यहाँ पन्नाधाय, गोराधाय जैसी स्वामीभक्त धायें भी हुई, वहीं रूपा–बडारण जैसी षड्यन्त्रकारी धाय भी हुई। मूमल जैसी प्रेमिका हुई तो राजकुमारी कृष्णाकुमारी को ज़हर पीना पड़ा। इस प्रदेश में मीरां बाई, सहजोबाई ने भक्ति और प्रेम का सन्देश दिया तो सलह कंवर वीर हाड़ी रानी ने अपना सर काटकर दे दिया। नाहरगढ़ में 9 पासवानों के लिए 9 महल बने वहीं रसकपूर की दर्दनाक मौत हुई। यहाँ के कई राजाओं और जागीरदारों के दर्जनों पत्नियाँ होती थीं, वहीं एक भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि किसी स्त्री के दर्जनों पति थे। यहाँ नवरात्रा नामक त्योहार पर कन्याओं को पूजा जाता है, वहीं हजारों कन्याओं को चकला घरों में धकेल दिया जाता है और हजारों नहीं बल्कि लाखों कन्याओं को भ्रूणावस्था में ही मार दिया जाता हैं। यहाँ शिव नामक देवता के लिंग की पूजा सरेआम होती है। वहीं ग्रामीण औरतों में आज भी पर्दा–प्रथा जारी है। यहाँ तेज़ाब से मुँह जलवाती और सरकारी अमला से परेशान ट्रेन के आगे कूदने को मजबूर नारी है, तो दूसरी ओर धाकड़ खिलाड़ी कृष्णा पूनिया है।

"जेहि की बिटिया सुन्दर देखी, तेहि पर जाई धरे हथियार" की तत्कालीन प्रवृत्ति रखने वाले उस सामन्ती युग की दीवारे ढ़ह रही हैं और नारी तूफान का मंजर ज़मीन पर आ रहा है तथा रूढ़िवादी आवरण से वह बाहर आने को आतुर है।

चूँकि अभिलेखीय स्रोत पुरातात्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत आते हैं तथा यह सर्वविदित है कि पुरातात्विक स्रोत इतिहासकारों के लिए तत्कालीन विभिन्न अवस्थाओं से सम्बद्ध अनेक अवधारणाओं को परिपुष्ट करने और कई भ्रान्त धारणाओं को ध्वस्त करने में यथेष्ट मदद करते हैं। इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी और इतिहास के क्लेवर को विस्तीर्ण करने वाले ये स्रोत प्रतिपादक व समर्थक के रूप में इतिहास निर्माण में सहायता ही नहीं करते बल्कि रेनियर, जी.एम. ट्रेविलियन व तुईजिंगा औलिवर जैसे विद्वानों की इस कथित टिप्पणी को भी खारिज करते हैं कि "इतिहास महज अतीत की कहानियों का पुलिन्दा है।"

प्रागैतिहासिक काल के कादमली, बूढ़ा पुष्कर तथा भरतपुर के दर में मिले शिला कुटीरों पर चित्रांकन से लेकर और हाल ही में जयपुर में निर्मित अमर जवान ज्योति के शहीद स्मारक अश्म पर उत्कीर्ण लेखों तक राजस्थान में पुरातात्विक सामग्री प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है। सरस्वती–दृषद्वती, बनास तथा लवणी सरिताओं की घाटियों में मानव सभ्यता ने यहाँ बहुत पहले ही अपने पाँव पसार लिए थे। यहाँ अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों, दानपत्रों, मूर्तिशिल्प, चित्रांकन तथा टेराकोटा आदि सभी हमें हम नारी विषयों को वर्णित पाते हैं।

नारी का उल्लेख देवी, शक्ति, लक्ष्मी, भद्रा, सती, यक्षिणी, माता, रानी, अप्सरा, अर्द्धनारीश्वर, खवास, पासवान, नृत्यमुद्रा तथा

काम व सौन्दर्य रूपों में हमें देखने को मिलता है। राजस्थान में मिले अभिलेख जो मुख्यतः अर्द्धमागधी, प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, फारसी, उर्दू तथा क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गये हैं, में स्त्री–विमर्श कई रूपों में हुआ है। अभिलेख बहुधा शिलाओं, प्रस्तर–पट्टों, भवनों या गुहा दीवारों, मन्दिरों, मठों, स्तम्भों, तालाबों, बावड़ियों, कूपों, स्तूपों आदि पर उत्कीर्ण मिले हैं।

देवी रूप में उल्लेख ओसियाँ के महिष्मर्दिनी लेख (वि.सं. 1234) में हुआ है जिसके अनुसार सच्चिका माता देवालय में चण्डिका, शीतला, सच्चिया, क्षेमकरी प्रभृति देवियों तथा क्षेत्रपाल भैरव की अर्चाएँ प्रतिष्ठित की गई थी। सांभर लेख (सं. 998) के एक पाषण लेख में सरस्वती की स्तुति है तथा उसे आनन्द दायिका अज्ञान विनाशनी कहा गया है। आबू के निकट वसन्तगढ़ से प्राप्त वर्मलात के लेख (वि.सं. 682) के अभिलेख में क्षेमकरी दुर्गामाता 'क्षेमार्या' की वन्दना की गई है। क्षेमार्या सुस्वास्थ्य की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती है। गोठ–मांगलोद (नागौर) से प्राप्त सातवीं शती के एक अभिलेख में वागीश्वरी सरस्वती की वन्दना की गई है। तत्पश्चात् यह अभिलेख दाहिमा ब्राह्मणों की कुल देवी "दधिमती" के भवन निर्माण का उल्लेख करता है। यह अभिलेख अब गायब है। इसका उल्लेख मुंशी देवी प्रसाद ने अपनी पुस्तक "मारवाड़ के प्राचीन लेख" में किया है। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि स्त्रियाँ पाशुपत सम्प्रदाय की दीक्षा भी लेती थी। आबू के वि.सं. 1265 के लेख में शान्ता ब्रह्मचारिणी का तथा कल्याणपुर लेख में शैवाचार्य कुटुकाचार्य की शिष्या वैणा का उल्लेख हुआ है। छोटी सादड़ी लेख तथा खण्डेला लेख में शिव के अर्द्धनारीश्वर रूप का उल्लेख आया है। इसमें दक्षिणांग भगवान शिव का तथा वामांग पार्वती का होता है। किणसरिया लेख जो परबतसर के कैवायमाता के मंदिर में लगा है, में कात्यायनी और काली देवी की स्तुति की गई है। चित्तौड़ के 971 ई. के अभिलेख में 75वें श्लोक में देवालय में स्त्रियों के प्रवेश को निषिद्ध बतलाया है। यह तथ्य उस समय की सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश डालता है। निषेधात्मक नियम से हमें संभावित दुराचार की प्रवृत्ति और धार्मिक स्तर के पतन की ओर संकेत मिलता है।

सती प्रथा का उल्लेख भी कई अभिलेखों में मिलता है। मण्डोर से प्राप्त पंचकुण्ड लेख के अनुसार राठौड़ भूवणि के पुत्र सलखा की मृत्यु पर उसकी तीन रानियाँ सलखणदेवी चहुँवाणी, सावलदेवी सालंकिणी व सेजण देवी गहलोतणी सती हुई थी। यह लेख अब जोधपुर संग्रहालय में है। उस्तराँ की देवली के लेख के अनुसार गुहिल वंशीय निहुणपाल के साथ उनकी रानियाँ भी सती हुई थी। राठौड़ नरहरिदास की पत्नी किसना के सती होने का उल्लेख हुडेरा जोगियान (चुरू) के सती स्मारक लेख में हुआ है। चीरवा के लेख में योगराज द्वारा योगेश्वरी देवी के मंदिर का निर्माण कराने तथा बालक तथा मृत्यु पर उसकी पत्नी भोली द्वारा सती होने का उल्लेख है। राणुक की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी संपलदेवी के सती होने का उल्लेख घटियाला के देवली लेख (947 वि.सं.) में है। बस्सी (नागौर) के वि.सं. 1189 के लेख के अनुसार चाहमान शासक अजयपाल की मृत्यु होने पर उसकी तीन रानियाँ सती हुई थी। महारावल विष्णुसिंह (बांसवाड़ा) के स्मारक लेख के अनुसार उसके मरने पर एक पासवान रूपाबाई भी सती हुई थी। बैराठ के साँवलदास के सं. 1743 के लेख के अनुसार उसने छत्री का निर्माण अपनी माता के सती होने की याद में करवाया था। राजपूतों के अलावा सती प्रथा का प्रचलन वैश्यों में भी था। सादड़ी लेख में तारांचद ओसवाल के साथ उसकी 11 स्त्रियाँ सती होने का उल्लेख है। इस लेख के पास ही ताराचंद की औरतों, एक खवास, 6 खायिकाओं आदि की मूर्तियाँ पत्थर पर उत्कीर्ण है। इससे ओसवालों में भी सती प्रथा का प्रचलन का पता चलता है। जोधपुर के पाल से प्राप्त वि.सं. 1244 के लेख से ज्ञात होता है कि धर्कट (वैश्य) जातीय समधर के पुत्र की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी सती हो गई थी। रानी कैलच्च देवी के वि.सं. 1239 के अभिलेख से ज्ञात होता है कि पृथ्वीदेव की मृत्यु पर इस रानी ने सती होने का निश्चय कर लिया था, परन्तु पुत्र, सचिवों और विद्वानों के समझाने–बुझाने पर उसने अन्ततः अपना निर्णय बदल दिया।

निर्माण कार्य के लिए भी कई महिलाएँ प्रसिद्ध हुई। अपराजित के लेख में गुहिल वराहसिंह की रानी यशोमति द्वारा कैटभरिपु (विष्णु) मंदिर बनाने का उल्लेख है जो उसने लक्ष्मी, यौवन और वित्त को क्षणिक मानकर संसार रूपी समुद्र को तैरने के लिए नावरूपी यह मंदिर बनवाया था। किराडू के लेख के अनुसार तेजपाल की स्त्री ने, जब तुरूक्कों के द्वारा मंदिर मूर्ति को तोड़ा हुआ पाया तो उसने नई मूर्ति की स्थापना कराई और मदन ब्रह्मदेव द्वारा मंदिर की पूजा के लिए दो विंशोपक एवं दीपक के लिए तेज की व्यवस्था की। इन्द्रगढ़ के लेख में सिरदारसिंह की महारानी द्वारा बावड़ी निर्माण की सूचना अंकित है। लूणवसही (आबू–देलवाड़ा) प्रशस्ति में उल्लेखित है कि रामसिंह के समय में मंत्री वस्तुपाल के छोटे भाई तेजपाल ने आबू पर देलवाड़ा में लूणवसही नामक नेमिनाथ का मंदिर अपनी स्त्री अनुपमा देवी के श्रेय के लिए बनवाया था। बीठू के लेख में राठौड़ों के आदि पुरुष सीहा के पिता का नाम सेतकुंवर बताया है तथा सीहा की मृत्यु (1273 ई.) पर उसकी पत्नी पार्वती ने देवली स्थापित की।

महणसिंह की भार्या साहिणी की पुत्री कुमारिला श्राविका द्वारा पितामह पूना व मातामह ढाड़ा के श्रेयार्थ देव कुलिकाँ बनवाने का उल्लेख चित्तौड़ के लेख में है। गोवर्धन विलास में मानजी धायभाई के कुण्ड की प्रशस्ति के अनुसार चन्द्रकुंवरी (जिसका विवाह सवाई जयसिंह के साथ हुआ था) की गुर्जर जाति की धाय भीला के पुत्र माना धायाभाई के द्वारा कुण्ड व बाग बनाये जाने का उल्लेख है।

स्त्री के गुणों तथा सौन्दर्य रूपों का उल्लेख भी राजस्थान के अभिलेखों में भरपुर मात्रा में हुआ है। जावर की प्रशस्ति, जावर के रामस्वामी मन्दिर की है जिसे महाराणा रायमल की बहिन रमाबाई ने बनवाया था (1497)। इस प्रशस्ति के दूसरे भाग में 'रमा' वर्णन है, जिसमें उसके सौन्दर्य, गुण, प्रतिभा तथा संगीत प्रेम की जानकारी मिलती है। इससे प्रतीत होता है कि उच्च कुल की स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार था। रमाबाई मीरां बाई से पहले हुई तथा वह श्री कृष्ण भक्त थी। रसिया की छत्री के लेख में रानियों के श्रृंगार उनके उबटन के (चन्दन का) वर्णन के साथ तुलनात्मक रूप से श्वरियों के बेल, पत्ते, गुजाँ आदि आभूषणों का वर्णन है। वहीं घोसुण्डी की बावड़ी के लेख में महाराणा रायमल व जोधपुर के राव जोधा की पुत्री श्रृंगार देवी के विवाह का बड़ा रोचक वर्णन है। स्त्री के आभूषणों का वर्णन नाथ प्रशस्ति एकलिंगजी (971 ई.) में हुआ है। बसन्तगढ़ लाणबावड़ी प्रशस्ति (वि.सं. 1099) में देव किन्नरों की स्त्रियों का उल्लेख आया है जो वीणा के ऊपर हाथ के सुन्दर नखों और अंगुलियों को रखकर भूषित कण्ठों से निकली हुई उक्तियों से यशोगान करती हैं। औसियाँ के महावीर लेख के अनुसार जिन्दक की पत्नी चदुवहरा प्रसन्नता से युक्त और अपने यश से रमणीय थी, जिस प्रकार नदी समुद्र का अनुसरण करती है उसी प्रकार वह अपने पति का अनुसरण करती है। इसमें राम द्वारा रावण के वध के बाद सीता का राम द्वारा दृढ़ आलिंगन करने का उल्लेख आया है। चाटलू अभिलेख (वि.सं. 870–813 ई.) में विष्णु लक्ष्मी से कहते हैं–हे स्वामिन प्रियतम! तुम अकेली ही मेरे हृदय में निवास करती हो। यह जो आपने कहा, और अपने वक्षः स्थल पर स्थित कौस्तुममणि रूपी स्वच्छ दर्पण में स्थित अपनी प्रतिमूर्ति को देखकर लक्ष्मी ने जिसको ईर्ष्या पूर्वक कहा। आगे लक्ष्मी से कहलावया गया है कि अपने प्रियतमों के वियोग से दुःखी जो वियोग से दुःखी जो गोपियाँ अपने प्राणों को छोड़कर स्वर्ग को गई वे ही पूर्ववत् तुम्हारे रतिसुख को प्राप्त के लिए वापस लौट आई हैं। इसी अभिलेख की 27वीं पंक्ति के अनुसार सुमन्त भट्ट ने वीरूक की कृशागीं पुत्री पुराशा से विवाह किया। गम्भीर सेवक वर्ग में उदार स्वभाव वाली, स्त्री होने से चंचल होते हुए भी नित्य मर्यादा में स्थिर रहने वाली तथा शरीर से जंघा आदि अंगों से मोटी होते हुए भी वाणी में मधु, शानत स्वभाव वाली भी, श्यामा अर्थात् श्याम वर्ण वाली भी लाल वर्ण वाली थी अर्थात् अपने प्रियतम में अनुरक्त थी। अपने हाथों से ही मुख प्रसादन करने वाली तथा भोले स्वभाव की होते हुए भी भाग्य के विषय में चतुर थी।

गणिकाएँ भी तत्कालीन समाज का अंग रही हैं। भीनमाल से प्राप्त लेख में जगत स्वामी के सूर्य मंदिर की गणिकाओं के लिए सज्जा सम्बन्धी प्रबन्ध की सूचना मिलती है। बसन्तगढ़ के अभिलेख के अनुसार वटपुर नगर पुराणपाठी ब्राह्मणों, गणिकाओं व सैनिकों से सुशोभित रहता था। जोजल देव के सादड़ी तथा नाडोल अभिलेखों में देव यात्रा सम्बन्धी अभिलेखों में कहा गया है कि किसी देवता विशेष की यात्रा के दिन अन्य देवताओं की गणिकाओं को भी सुन्दर वस्त्रों व अलंकरणों से सुसज्जित होकर उपस्थित होना होगा। वि.सं. 1200 के नाणा से प्राप्त लेख में विलासिनी और मेहरी नामक देवदासियों का उल्लेख हुआ है। हर्षनाथ अभिलेख से ज्ञात होता है कि सामन्त अपने स्वामियों को सुन्दर गणिकाएँ भेंट कर उन्हें प्रसन्न करते थे।

वैवाहिक तथा स्त्री पुरुष सम्बन्धों का उल्लेख भी लेखों में पर्याप्त रूप से हुआ है। चाटसू प्रशस्ति से आपसी वैवाहिक सम्बन्धों का पता चलता है। इसके अनुसार हर्षराज की रानी लिल्ला से उत्पन्न दूसरे गुहिल ने परमार बल्लभराज की पुत्री रज्जा से विवाह किया। इसके पुत्र भट्ट ने दक्षिण के राजाओं को जीतकर वीरूक की पुत्री पुराशा से विवाह किया। घटियाला लेख में कुक्कुक प्रतिहार को विनीत स्त्रियों का साथी बताया गया है। भेड़ाघाट का लेख (जबलपुर) जो मालवा तथा चेदिवंश से मेवाड़ के वैवाहिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। चेदि के कलचुरि (हैहय) वंशी राजा गयकर्णदेव की विधवा रानी अल्हण देवी के द्वारा निर्मित शिव मंदिर में मिला था। इसमें वर्णन है कि मके वैरीसिंह के उत्तराधिकारी विजयसिंह की पत्नी श्यामल देवी मालवा के परमार राजा उदयादित्य की पुत्री थी। इससे अल्हणदेवी नामक कन्या उत्पन्न हुई जिसका विवाह चेदि गयकर्णदेव से हुआ। मानमोरी का अभिलेख जिसे कर्नल टॉड ने यात्रा के दौरान समुद्र में फैंक दिया था, का उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक में किया है। इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया गया। उसने अपने अनेक शत्रुओं को कैद में डाल दिया और फिर भी वह उनकी पत्नियों का प्रिय बना रहा। इससे पता चलता है कि विजेता पराजितों की स्त्रियों को हस्तगत कर लेते थे और अपनी पत्नियाँ

बना लेते थे। बाउक के जोधपुर लेख से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण राजा हरिश्चन्द्र ने भद्रा नामक क्षत्रिया से विवाह किया तथा शक्ति कुमार के आटपुर लेख के अनुसार अल्लट ने हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया। ये दोनों अनुलोम विवाह के उदाहरण हैं।

बहुविवाह का उल्लेख रणकपुर के लघु लेख में मिलता है। इसमें श्रावक भीमा की तीन पत्नियों–भामिणी, नानलदेवी तथा पउमादेवी का उल्लेख है। बाउक के जोधपुर लेख से ज्ञात होता है कि हरिश्चन्द्र के दो पत्नियाँ एक क्षत्रिय जातीय तथा दूसरी ब्राह्मण जातीय थी। बस्सी (नागौर) लेख के अनुसार चहमान अजयपाल की तीन रानियाँ–पट्टममहादेवी, सोमल, सहतलदे और श्रीदेवी थी।

बहन के रूप में स्त्री का उल्लेख परमार पूर्णपाल की बसन्तगढ़ लावणबावड़ी प्रशस्ति में हुआ है। इसके अनुसार पूर्णपाल की लाहिनी नामक छोटी बहिन थी जो कमलों से रहित लक्ष्मी के समान थी। जिसके साथ विग्रहराज नामक राजा ने विवाह किया। उसने गुणों से युक्त वितोषित पत्नी को प्राप्त करके भोग भोगे। वह भी रमण करने योग्य पति को प्राप्त करके रमण करती थी। विग्रहराज के मरने पर स्वामी के वियोग से पीडित अंगों वाली लाहिनी अपने भाई के घर आई।

दशापराध के लिए दण्डों की व्यवस्था का उल्लेख भी लेखों (एपिग्राफिया इंडिया 3, पृ. 263) में हुआ है। इसमें परस्त्रीगमन, बिना पति के गर्भाधारण अश्लीलता तथा गर्भपात आदि अपराध शामिल हैं।

अतः स्पष्ट है कि पुरातात्विक साक्ष्यों के बिना इतिहास एक बालू के टीले पर विद्यमान है। यही स्रोत इतिहास निर्माण में आधार सामग्री का काम करते हैं।

सीनियर रिसर्च फैलो (इतिहास)
राजस्थान विश्वविद्यालय

सन्दर्भ

[1] शास्त्री चतुरसेन, 'गोली' उपन्यास। इनके जीवन का विशद् वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।
[2] थपल्याल डॉ. किरण कुमार, सिन्धु सभ्यता, लखनऊ, पृ. 303–304.
[3] शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 20–21.
[4] चौबे डॉ. रमेश, पुरातात्विक मानव विज्ञान, पृ. 126.
[5] वशिष्ठ, पुरोहित शर्मा, राजस्थान के प्रमुख अभिलेख, पृ. 1.
[6] गहलोत, पुरोहित शर्मा, राजस्थान के प्रमुख अभिलेख, पृ. 1.
[7] मुंशी देवी प्रसाद, मारवाड़ के प्राचीन लेख (1894) पृ. 7.
[8] व्यास श्यामा प्रसाद, राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 73.
[9] शर्मा डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्रोत, पृ. 30
[10] ओझा गौरीशंकर हीराचन्द–जोधपुर राज्य का इतिहास, पृ. 30
[11] व्यास, श्यामा प्रसाद–वही, पृ.–127.
[12] श्यामल दास वीर विनोद, पृ. 568
[13] राजकीय संग्रहालय, अजमेर
[14] गहलोत, पुरोहित, शर्माः राजस्थान के प्रमुख अभिलेख, पृ. 187–188.